उपर्युक्त कारकों के अतिरिक्त कुछ अन्य तत्त्व भी हैं जो भारतीय सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित कर रहे हैं। आगामी अवतरणों में हम उनका संक्षिप्त उल्लेख करेंगे।

(1) संस्कृतीकरण (Sanskritisation)—भारतीय समाज में वर्ण-व्यवस्था का अपना एक विशिष्ट स्थान था। इस व्यवस्था के अन्तर्गत श्रम-विभाजन की विधिवत् व्यवस्था थी। प्रत्येक वर्ण के लोग अपने कार्यों को करते थे। कार्यों के आधार पर ही विभिन्न वर्णों के लोगों को एक निश्चित सामाजिक प्रस्थिति प्राप्त थी। ब्राह्मण सर्वोच्च सामाजिक प्रस्थिति का व्यक्ति माना जाता था, उसके बाद क्षत्रिय, फिर वैश्य और सबसे अन्त मे शूद्र वर्ण के लोगों का स्थान था। कौन व्यक्ति किस वर्ण में रहेगा इसका निर्धारण व्यक्ति के गुण और झुकाव पर निर्भर करता था। जाति-व्यवस्था के अन्तर्गत यह व्यवस्था जन्मजात हो गई फिर भी प्रत्येक जाति की सामाजिक प्रस्थिति परम्परागत बनी रही।

संस्कृतिकरण प्रक्रिया के अन्तर्गत नीची जातियों के सदस्य उच्च जातियों के व्यवहारों को अपना रहे हैं। इस अनुकरण की प्रक्रिया के कारण निम्न जाति के सदस्यों का व्यवहार परिवर्तित हो रहा है जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक परिवर्तन आवश्यक हो जाता है। उदाहरण के तौर पर चमार तथा अस्पृश्य जाति के सदस्य ब्राह्मणों का अनुकरण अपने जीवन की गतिविधि में इसलिए कर रहे हैं ताकि उनकी प्रस्थिति में सुधार हो और वे भी समाज में वही प्रतिष्ठा पा सकें जो ब्राह्मणों को मिलती रही है। पूजा-पाठ, जनेऊ धारण करना, तीर्थयात्रा करना, अब शूद्र उसी प्रकार कर रहे है जैसा ब्राह्मण किया करते हैं। अब वे अपने परम्परागत कार्यों को करना नहीं चाहते। इस स्थिति के कारण सामाजिक सम्बन्ध परिवर्तित हो रहे है। संस्कृतीकरण की स्पष्ट प्रक्रिया स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद दृष्टिगत हुई है वैसे इसके पहले भी छोटी प्रस्थिति के लोग उच्च प्रस्थिति वाले लोगों का अनुकरण करते रहे हैं। निम्न जाति के लोगों द्वारा नये व्यवहार प्रतिमान के अपनाने के कारण अब उनमें नये-नये विचारों का समावेश हो रहा है, इसी विचार-परिवर्तन के कारण उनके मूल्य तथा मान्यताएँ भी बदल रही है, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय समाज में परिवर्तन हो रहा है।

(2) औद्योगीकरण (Industrialisation)—यद्यपि प्रौद्योगिक कारक का वर्णन ऊपर किया गया है फिर भी औद्योगीकरण प्रक्रिया का वर्णन भारतीय सामाजिक परिवर्तन को व्यक्त करने के लिए आवश्यक जान पड़ता है। औद्योगीकरण से तात्पर्य औद्योगिक क्रान्ति से है जिसके परिणामस्वरूप किसी समाज में बड़े उद्योग-धन्धों का विकास होता है। भारतवर्ष में प्रौद्योगिक कारक सदियों से सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित करता रहा है फिर भी उसे हम औद्योगीकरण नहीं कहेंगे, क्योंकि उससे बड़े और मूलभूत उद्योगों का विकास सम्भव नहीं हो सका। भारत में औद्योगीकरण का वास्तविक श्रीगणेश 1956 ई० में माना जाता है, जबकि भारतीय सरकार ने नियोजन के माध्यम से औद्योगिक विकास का कार्यक्रम शुरू किया। द्वितीय पंचवर्षीय योजना की उपलब्धियों से पता चलता है कि अब भारतवर्ष में औद्योगीकरण की प्रक्रिया कार्यरत है जिसका प्रभाव हमारे सामाजिक सम्बन्धों पर पड़ रहा है। बड़े-बड़े उद्योगों के विकास के कारण जहाँ एक ओर आर्थिक विकास में सहायता मिल रही है वहीं पर दूसरी ओर विभिन्न सामाजिक समस्याएँ, जैसे बेकारी, गन्दगी, शारीरिक अपराध, चोरी आदि के कारण सामाजिक सम्बन्ध परिवर्तित हो रहे हैं। प्राथमिक सामाजिक सम्बन्ध जो भारतीय समाज की विशेषता थी अब बदलकर द्वितीयक होती जा रही है। सामाजिक दूरी की अवधारणा समाप्त हो रही है जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव गतिशीलता में वृद्धि है। लोग अपने गाँवों को छोड़कर उन स्थानों को जाने लगे हैं जहाँ उद्योग स्थापित किये जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में इस बात की सम्भावना अब बढ़ रही है कि लोग कहीं अब अपने परम्परागत सगठनों से सम्बन्ध न तोड़ लें। ऐसा हो भी रहा है। ऐसे लोग जिनकी प्रस्थिति गाँव में ऊँची नही है वे शहरो की ओर या उस स्थान पर जहाँ उद्योग लगाये गये है इसलिए जा रहे हैं ताकि उनकी प्रस्थिति में सुधार हो जाये। यदि ऐसा सम्भव हो सका तो फिर वे लोग अपने पैतृक स्थान से अपने निकट सम्बन्धियों को भी बुला लेते है और स्थायी रूप से उस नये स्थान पर रहने लगते हैं। इस आप्रवास तथा उत्प्रवास के कारण अनेक सामाजिक समस्याएँ

अवतरित हो रही है, जिसके कारण सामाजिक परिवर्तन हो रहा है। औद्योगीकरण ने भारतीय समाज को अब 'स्थिर समाज' से 'गतिशील समाज' में परिवर्तित कर दिया है जिसका परिणाम यह हुआ है कि आये दिन लोगों की 'प्रस्थिति' तथा 'कार्य' बदल रहा है जिससे सामाजिक संगठन में परिवर्तन आवश्यक हो जाता है। औद्योगीकरण के कारण 'अभिजात वर्ग' के रूप में अब वे लोग भी आने लगे हैं जिनकी प्रस्थिति अभी तक नीची रही है। ऐसे लोगो का व्यवहार परम्परागत व्यवहार प्रतिमान का विरोध करता है और नये व्यवहार प्रतिमान को समाज के सामने रखता है। इस प्रकार व्यवहार प्रतिमान में परिवर्तन के कारण भी सामाजिक परिवर्तन हो रहा है। औद्योगीकरण मे अब स्त्रियों को भी आर्थिक उत्पादन कार्य के योग्य बना दिया। पहले यह धारणा अधिक बलवती थी कि स्त्रियाँ चूंकि शारीरिक शक्ति में पुरुषों से कमजोर होती है अतः उन्हें घर के अन्दर के कामों को ही करना चाहिए। घर के बाहर का कार्य जिसमे आर्थिक उत्पादन कार्य प्रमुख है पुरुषों के लिए छोड़ देना चाहिए। लेकिन मशीनीकरण के कारण अब शारीरिक शक्ति की महता घटी है। अब तो बटन दबाने मात्र से उत्पादन प्रारम्भ हो जाता है जिसे पुरुष और स्त्री कोई कर सकता है। ऐसी स्थिति मे, स्त्रियाँ अब घर के अन्दर के कार्य को अनुचित, प्रस्थिति-विरोधी तथा सम्मानघातक सिद्ध करते हुए पुरुषों के समान बाहर जाकर उद्योगों में काम कर रही है। यदि किसी परिवार में दोनों स्त्री-पुरुष (पति-पत्नी) उद्योग में काम करते हैं तो उनके आश्रित बच्चों का समाजीकरण ठीक से नहीं हो पाता क्योंकि उन बच्चों की देखभाल के लिए उचित स्थान अभी भारत में पर्याप्त संख्या में बन नही पाया है। वे बच्चे उन कार्यों को बाल्यावस्था से शुरू कर देते हैं जिसे अपराधी या समाज विरोधी कृत्य कहा जाता है। आगे चलकर यही बच्चे पेशेवर अपराधी के रूप मे कार्य करने लगते हैं। परिवार की आर्थिक समृद्धता जैसे-जैसे बढ रही है (क्योंकि पति-पत्नी दोनों नौकरी करते है) वैसे-वैसे परिवार मे अनैतिक व्यवहार की संख्या भी बढ़ने लगती है। ऐसा देखा गया है कि जिन परिवारों में परिवार के अधिकांश या सभी सदस्य नौकरी करते हैं या आर्थिक उत्पादन क्रिया में भाग लेते हैं वहाँ शराबखोरी या फिजूलखर्ची की आदत बढ जाती है। शराबखोरी के कारण व्यक्ति कभी-कभी उन व्यवहारों को कर बैठता है जो उनके आश्रितों के लिए उचित नहीं कहा जा सकता। इस प्रकार के व्यवहार के कारण भी सामाजिक परिवर्तन देखने को मिल रहा है। औद्योगीकरण मे 'पेशा वर्ग' को जन्म दिया है। किसी एक पेशे या किसी एक मशीन पर काम करने वाले लोगो में वही भावना आ जाती है जो किसी वर्ग या जाति के सदस्यों के बीच पायी जाती है। इस 'पेशे वर्ग' के लोग भले ही वे किसी भी जाति या धर्म के क्यों न हों, वे आपस में सभी प्रकार के सम्बन्ध जैसे वैवाहिक सम्बन्ध, उत्सव पर्व में साथ-साथ रहना, खाना-पीना आदि प्रारम्भ कर देते हैं जिसके कारण उनके परम्परागत व्यवहार प्रतिमान का उल्लंघन होता है और इस कारण भी सामाजिक सम्बन्ध परिवर्तित हो रहे हैं। औद्योगीकरण के कारण जहाँ विभिन्न प्रकार की चीजें समाज को उपलब्ध होने लगी हैं वही पर चीजों के मूल्य मे उल्लेखनीय वृद्धि हो रही है। मध्यम वर्ग तथा कुछ निम्न वर्ग के लोग इस स्थिति मे अधिक त्रस्त हो रहे हैं। इस दशा के कारण अब 'मध्यम वर्ग' का वह स्थान नहीं रह पा रहा है जो कुछ समय पहले था। इस स्थिति के कारण भी सामाजिक परिवर्तन हो